संस्कृत प्रचार पुस्तकमाला सं० १३

बाल-कवितावलिः

(हँसते-खेलते संस्कृत)

द्वितीय-भागः



सार्वभौम-सस्कृत प्रचार संस्थानम्

वा रा ण सी

प्रकाशक :
सार्वभौम-संस्कृत प्रचार संस्थानम्
डी० ३८/११०, हौजकटोरा, वाराणसी

डा० भारतीप्रकाश द्विवेदी

प्रधानाचार्य :

श्री विद्याधर्म प्रचारक संस्कृत महाविद्यालय

ग्राम-पोस्ट-भवानी छापर, जिला-देवरिया

की सहायता से

इनके दोनों पुत्रों के नामकरण संस्कार के

उपलक्ष्य में प्रकाशित

संस्करण : षष्ठ
मूल्य : पाँच रुपये पचास पैसे
मुद्रक :
आनन्द कानन प्रेस
डी० १४/६५ टेढ़ीनीम, वाराणसी

संस्कृत प्रचार पुस्तक-माला, सं० १३

बाल-कवितावलिः

(संस्कृत के प्रारम्भिक विद्यार्थियों के लिए विभिन्न नवीन एवं प्राचीन छन्दों में लिखित, कतिपय अत्यन्त सरल, सरस, सुबोध, शिक्षाप्रद एवं बालमनोरञ्जक संस्कृत कविताओं का उपहार)

रचयिता—

वासुदेव द्विवेदी शास्त्री

(संस्कृत प्रचार-पुस्तकमाला-सम्पादकः)

सार्वभौम-संस्कृत प्रचार संस्थानम्

वाराणसी

विनीत निवेदन

किसी भी भाषा में विद्यार्थियों का सुगमता से प्रवेश होने के लिए उस भाषा में ऐसे प्रारम्भिक साहित्य के निर्माण की आवश्यकता होती है जो ज्ञानवर्द्धक एवं शिक्षाप्रद होने के साथ ही अत्यन्त सरल, सुवाच्य, सरस, एवं मनोरञ्जक भी हो। इसीलिए आजकल की समस्त भाषाओं में प्रारम्भिक कक्षाओं की पुस्तकें इसी दृष्टि से लिखी जा रही हैं और इससे भी अधिक सरलतम पुस्तकों तथा शिक्षणपद्धति के निर्माण के लिए प्रयत्न किया जा रहा है।

परन्तु खेद के साथ कहना पड़ता है कि संस्कृत में प्रारम्भिक कक्षाओं के लिए इस प्रकार की पुस्तकों का नितान्त अभाव है। आज के इस वैज्ञानिक युग में भी संस्कृत पाठशालाओं में सर्वप्रथम विद्यार्थियों को वही लघुकौमुदी पढ़ाई जाती है जो बाल-विद्यार्थियों की सुकुमार-बुद्धि को कुण्ठित करने वाली एक कठिन पुस्तक है। इसके साथ ही और जो कुछ हितोपदेश आदि ग्रन्थ पढ़ाये जाते हैं वे कथात्मक होने से मनोरञ्जक तो होते हैं पर सन्धि समास की अधिकता के कारण उनकी भाषा इतनी क्लिष्ट होती है कि उन पुस्तकों के द्वारा विद्यार्थियों का भाषा में सहज प्रवेश नहीं होने पाता और इसीलिए विद्यार्थियों को उन्हें बहुधा रटकर ही तैयार करना पड़ता है। यही कारण है कि संस्कृत के विद्यार्थी संस्कृत बोलने-लिखने में अत्यन्त असमर्थ होते हैं।

ऐसी स्थिति में यदि हम संस्कृत को अधिक से अधिक जन-प्रिय तथा विद्यार्थियों के लिए रुचिकर बनाना चाहते हैं तो संस्कृत की भी प्रारम्भिक कक्षाओं के लिए ऐसी ही पुस्तकों के निर्माण की आवश्यकता है जो भाषाज्ञान-

वर्द्धक एवं शिक्षाप्रद होने के साथ ही सन्धि समास की जटिलता से रहित, व्यवहारोपयोगी शब्दों से युक्त, पढ़ने एवं सुनने में मधुर तथा मनोरंजक भी हो। इसी एक अत्यन्त आवश्यक किन्तु सर्वदा उपेक्षित कर्त्तव्य की पूर्ति के लिए हमने कुछ बालोपयोगी पुस्तकों के निर्माण, सम्पादन तथा प्रकाशन का कार्य आरम्भ किया है। प्रस्तुत पुस्तिका उन्हीं बालोपयोगी पुस्तकों में से एक अन्यतम पुस्तिका है।

कुछ शब्दरूपों एवं धातुरूपों का परिचय करा देने के बाद यदि विद्यार्थी इस पुस्तक को पढ़ें और इसके पद्यों को गाया करें तो मुझे विश्वास है कि विद्यार्थी अत्यन्त मनोरंजन के साथ संस्कृत भाषा में प्रवेश पा सकेंगे।

अन्त में हिन्दी, अंग्रेजी तथा संस्कृत पाठशालाओं के समस्त प्रधानाध्यापकों तथा उनके संस्कृताध्यापकों से हमारी विनीत प्रार्थना है कि वे अपने विद्यार्थियों से इस पुस्तक का प्रचार करें तथा यदि विशेष कठिनाई न हो तो इसे अनिवार्यता प्रदान कर उन्हें संस्कृत में विशेष योग्य बनाने के लिये इस तुच्छ सेवा को सहर्ष स्वीकृत करने की कृपा करें।

इस पुस्तक को पढ़ाते समय अध्यापकगण छात्रों को प्रत्येक सुबन्त, तिङन्त, कृदन्त एवं अव्यय शब्द का परिचय कराते हुए कविताओं का अर्थ पढ़ायेंगे, यह विशेष निवेदन है।

अधिक आषाढ पूर्णिमा २०५३ वि. — *विनीत प्रार्थी—*

३०-६-१९९६ ई. — **रचयिता**

बालकान् प्रति सस्नेहम्—

(१)

बाल-कवितावलिः पठ्यतां सर्वदा
बाल-कवितावलिः लिख्यतां सर्वदा।
बाल-कवितावलिः गीयतां सर्वदा
बाल-कवितावलिः श्रूयतां सर्वदा॥

(२)

पठ्यतां सर्वदा बाल-कवितावलिः
लिख्यतां सर्वदा बाल-कवितावलिः।
गीयतां सर्वदा बाल-कवितावलिः
श्रूयतां सर्वदा बाल-कवितावलिः॥

(३)

सर्वदा पठ्यतां बाल-कवितावलिः
सर्वदा लिख्यतां बाल-कवितावलिः।
सर्वदा गीयतां बाल-कवितावलिः
सर्वदा श्रूयतां बाल-कवितावलिः॥

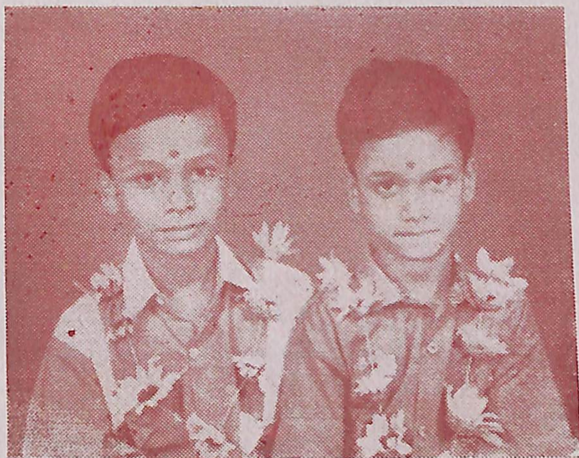


सार्वभौम संस्कृत प्रचार संस्थानस्य

संस्थापक-सञ्चालकवर्याणाम्

आचार्य-श्रीवासुदेवद्विवेदि-महोदयानां

प्रेयांसौ प्रपौत्रौ



ऋषिकुमार द्विवेदी विश्वरञ्जन द्विवेदी

(भाविनौ विश्वसंस्कृतप्रचारकौ)

वाग्देवतायै नमः

बाल-कवितावलिः

ईश-वन्दना

(१)

ईशं विश्व-निदानं वन्दे।
निगम-गीत-गुण-गानं वन्दे।
परितो वितत-वितानं वन्दे।
शोभा-शक्ति-निधानं वन्दे॥

(२)

मन्दिर-मस्जिद-वासं वन्दे।
गिरजाभवन-निवासं वन्दे।
जन-जन-हृदय-विलासं वन्दे।
कण-कण-कलित-प्रकाशं वन्दे॥

(३)

नव-लतिकासु लसन्तं वन्दे।
नव-सुमेषु विकसन्तं वन्दे।
शिशु-वदनेषु हसन्तं वन्दे।
शुचि-हृदयेषु वसन्तं वन्दे॥

(४)

विविध-नाम-तनु-रूपं वन्दे।
निर्गुण-सगुण-स्वरूपं वन्दे।
निराकार-साकारं वन्दे।
अपहृत-हृदय-विकारं वन्दे॥



प्रार्थना

(१)

प्रभोऽहं सदा सत्यवादी भवेयम्[१]
प्रभो नैव स्वप्नेऽपि मिथ्या वदेयम्।
भवेयं सदा लोक-कल्याण-कारी
भवेयं जगद्दुःख—दैन्याऽपहारी[२]॥

(२)

प्रभोऽहं सदा मातृभक्तो भवेयम्
प्रभोऽहं सदा पितृभक्तो भवेयम्।
प्रभोऽहं सदाऽचार्यभक्तो भवेयम्
प्रभोऽहं सदा देशभक्तो भवेयम्॥

(३)

सदाऽहं स्वधर्मानुरागी भवेयम्
सदाऽहं स्वकर्मानुरागी भवेयम्।
सदाऽहं स्वदेशानुरागी भवेयम्
सदाऽहं स्ववेषानुरागी भवेयम्॥

(४)

सदा ब्रह्मचर्यव्रतं पालयेयम्
सदाऽहं सदाचारमार्गे चलेयम्।
भवेयं विनीतो[३] विवेकी[४] गभीरः
यशस्वी महापण्डितः कर्मवीरः॥

शब्दार्थः—१. होऊँ २. संसार के दुःख और दीनता को दूर करने वाला ३. नम्र ४. विचारशील

वन्दना

(१)

दुर्गे! दुर्गति-हारिणि! वन्दे
कमले! कमल-विहारिणि! वन्दे।
देवि! सरस्वति! मतिदे! वन्दे।
जगति सदा शुभगतिदे! वन्दे॥

(२)

गंगे! त्रिभुवन-तारिणि! वन्दे।
यमुने! दुरित-विदारिणि! वन्दे।
गोदावरि! गति-दायिनि! वन्दे।
सिन्धो! सुमति-विधायिनि! वन्दे॥

(३)

गिरिवर! विन्ध्य! हिमालय! वन्दे।
नद-नदीश! वरुणालय! वन्दे।
हे प्रयाग! तीर्थेश्वर! वन्दे।
वाराणसि! रामेश्वर! वन्दे॥

(४)

वाल्मीके! कवि-नागर! वन्दे।
व्यासदेव! मति-सागर! वन्दे।
बुद्ध! सत्य-सन्धायक! वन्दे।
महावीर! मुनि-नायक! वन्दे॥

(५)

ज्ञानिवर्य! हे शङ्कर! वन्दे।
भेदभाव-विलयङ्कर! वन्दे।
रामानुज! जन-तारक! वन्दे।
भक्तिवाद-विस्तारक! वन्दे॥

विद्यायाः फलम्

(१)

विद्या ददाति विनयम्
विद्या ददाति वित्तम्[१]।
विद्या सदा जनानाम्
विमलं करोति चित्तम्॥

(२)

विद्या तनोति[२] कीर्तिम्
विद्या तनोति मानम्[३]।
विद्या नरं समाजे
कुरुते सदा प्रधानम्॥

(३)

विद्या निहन्ति[४] दोषम्
विद्या निहन्ति भारम्।
दूरीकरोति विद्या
सकलं मनो-विकारम्॥

(४)

विद्या न राज-हार्या[५]
विद्या न चोर-हार्या[६]।
विद्या कदापि लोके
नहि बन्धुभिः विभाज्या[७]॥

(५)

विद्या गुणः प्रधानः
विद्या धनं प्रधानम्।
देशे तथा विदेशे
विद्या बलं प्रधानम्॥

शब्दार्थः- १. धन, २. फैलाती है, ३. प्रतिष्ठा, ४. नष्ट करती है, ५. राजासे छीनने लायक, ६. चोरों से चुराने लायक, ७. बाँटने लायक।

बाल-पाठशाला

मम बाल-पाठशाला
बहु शोभते विशाला।
शिशवो[१] लिखन्ति यस्यां
फ़लकेषु[२] वर्णमालाः[३]॥

केचित्[४] पठन्ति बालाः
केचित् लिखन्ति बालाः।
कलयन्ति[५] केऽपि पट्टे[६]
खटिकेन[७] अङ्कमालाः[८]॥

खेलन्ति केऽपि खेलम्—
बालाः मिथः[९] सहेलम्[१०]।
निपतन्ति[११] उत्पतन्ति[१२]—
प्रपतन्ति[१३] चानुवेलम्[१४]॥

गायन्ति केऽपि गीतम्
ददते च केऽपि तालम्।
रचयन्ति केऽपि वालाः—
कुसुमेषु आलवालम्[१५]॥

कर्षन्ति केऽपि भूमिम्
सिञ्चन्ति[१६] केऽपि मूलम्।
कृन्तन्ति[१७] केऽपि सूत्रम्,
धुन्वन्ति[१८] केऽपि तूलम्[१९]॥

ब्दार्थः- १. बच्चे, २. पाटियों पर, ३. अक्षर, ४. कुछ, ५. गिनते हैं, ६. पाटी पर, ७ खड़िया से, ८. संख्यायें, ९. आपस में, १०. हँसी-खुशी के साथ, ११. गिरत हैं, १२. उछलते हैं, १३. जोर से गिरते हैं, १४. बार-बार, १५. थाला, १६ जोतते हैं, १७. कातते हैं, १८. बुनते हैं, १९. रूई।

कः कुत्र किं करोति

(१)

विपिने[१] चरन्ति गावः
सलिले[२] चलन्ति नावः[३]।
गगने[४] लसन्ति[५] ताराः
विकिरन्ति[६] दीप्ति-धाराः[७]॥

(२)

कमले लसन्ति भृङ्गाः
तरु-कोटरे[८] विहङ्गाः[९]।
निपतन्ति दीप-मध्ये
परितो[१०] द्रुतं[११] पतङ्गाः॥

(३)

समरे[१२] मिलन्ति शूराः
समरे मिलन्ति वीराः।
धावन्ति सैन्य - मध्ये
तुरगा[१३] गजा अधीराः॥

(४)

गेहे लगन्ति तालाः
कण्ठे लसन्ति मालाः।
खेलन्ति धूलि-मध्ये
ग्रामेषु बाल-बालाः॥

शब्दार्थः- १. वनमें, २. पानी में, ३. नौकायें, ४.आकाश में, ५. चमकती हैं, ६. बिखेरती हैं, ७. प्रकाश की धाराएँ, ८. पेड़ के घोंसले में, ९. पक्षी, १०. चारों ओर से, ११. जल्दी जल्दी, १२. लड़ाई में, १३. घोड़े।

शरीर-रक्षा

शरीरं सदा बालकैः रक्षणीयम्।
शरीरं सदा बालकैः रक्षणीयम्॥

शरीरेण शोभा शरीरेण सिद्धिः
शरीरेण लोके समस्ता[१] समृद्धिः।
शरीरेण अन्नं शरीरेण वस्त्रम्
शरीरेण पुत्रः सुता[२] वा कलत्रम्[३]॥

अपथ्यं न अन्नं क्वचिद् भक्षणीयम्।
शरीरं सदा बालकैः रक्षणीयम्॥

शरीरेण विद्या शरीरेण बुद्धिः।
शरीरेण ज्ञानं शरीरेण शुद्धिः।
शरीरेण पूजा शरीरेण योगः।
शरीरेण सौख्यं शरीरेण भोगः।

शरीरं शिशो! जातु नोपेक्षणीयम्[४]।
शरीरं सदा बालकैः रक्षणीयम्॥

शरीरं सदा देहिनां धर्ममूलम्।
शरीरं सदा देहिनां कर्ममूलम्।
शरीरं सदा देहिनां शर्म[५]मूलम्।
शरीरं सदा देहिनां सर्वमूलम्।

शरीरं ततः सर्वथा पोषणीयम्।
शरीरं सदा बालकैः[६] रक्षणीयम्॥

शब्दार्थः—१. धन-दौलत २. लड़की ३. स्त्री ४. उपेक्षा करने योग्य नहीं ५. कल्याण ६. पोषण करने योग्य।

बालकानां दिनचर्या

(१)

वयं बालकाः सदा पठामः
वयं बालकाः सदा लिखामः।
वयं बालकाः नियमित-समये[1]
विद्यालयं सदा गच्छामः॥

(२)

वयं बालकाः हरिं भजामः
वयं बालकाः गुरुं नमामः।
वयं बालकाः माता-पितरौ
सेवया च[2] मुदितौ[3] कलयामः[4]॥

(३)

वयं वयस्यैः यदा मिलामः
तदा प्रसन्ना वयं भवामः।
वयं मिलित्वा सर्वे सायं
क्रीडाऽङ्गणे[6] खेलितुं यामः[7]॥

(४)

वयं प्रभाते उत्तिष्ठामः[8]
ततो वयं शौचार्थं यामः।
ततः स्नान-सन्ध्यादिं कृत्वा
भोजनाय गेहं[9] प्रविशामः॥

शब्दार्थः—१. ठीक समय पर २. सेवा से ३. प्रसन्न ४. करते हैं ५. साथियों से ६. खे
के मैदान में ७. जाते हैं ८. उठते हैं ९. घर में।

आज्ञां मानय[1]

आज्ञां मानय मान्य-जनानाम्
आज्ञां मानय पूज्य-जनानाम्।
आज्ञां मानय ज्येष्ठ-जनानाम्
आज्ञां मानय श्रेष्ठ-जनानाम्॥



न कुरु विलम्बम्

न कुरु विलम्बं शौचे स्नाने
न कुरु विलम्बं भोजन-पाने।
न कुरु विलम्बं उषसि[2] विहरणे[3]
न कुरु विलम्बं विद्याग्रहणे॥



मा कुरु सङ्गम्

मा कुरु सङ्गं दुष्ट-जनानाम्
मा कुरु सङ्गं नीच-जनानाम्।
मा कुरु सङ्गं धूर्त-जनानाम्
मा कुरु सङ्गं चौर-जनानाम्॥



मा भव

मा भव दीनः मा भव हीनः
मा भव चोरित-पर-धन-पीनः[4]।
मा अविवेकी मा अविनीतः[5]
मा अतिशीघ्रं रक्तः[6] पीतः[7]॥

शब्दार्थः—१. मानो २. बहुत सबेरे ३. घूमने में ४. मोटा ५. उद्दण्ड ६. लाल ७. पीला।

बालकानाम् आत्मपरिचयः

१—महामना वक्ता अतिभव्यः[१]।
अहं मदनमोहन - मालव्यः॥

२—अहं वैरि-मद-मर्दन-शैलः[२]।
महावीर - सरदार पटेलः॥

३—विषये यस्य न कोऽपि प्रवादः।
सोऽहं श्री राजेन्द्र प्रसादः॥

४—यः पश्यति सकलं सम-भावे।
सोऽहं सन्त विनोवा भावे॥

५—अद्भुत-शक्ति-बुद्धि-बल-वासः।
अहं प्रथित[३]-प्रणवीर-सुभासः॥

६—अहं स्पष्टवक्ता स्वच्छन्दः।
सुधी — प्रवर — सम्पूर्णानन्दः॥

७—इयं येन भारतभूः छिन्ना[४]।
अहं कायदे आजम। जिन्ना॥

८—शान्ति- सत्य- दृढ़ता-परिवारः।
अहं सन्त अब्दुल-गफ्फारः॥

९—कठिन-कार्य -साधन -व्यवसायी।
अहं रफी अहमद किदवाई॥

१०—अहं सुशोभित—भारत—भालः।
विजयी वीर—जवाहरलालः॥

शब्दार्थः—१. अति सुन्दर २. पहाड़ ३. विख्यात ४. खण्डित की गई।

अनुशासनम्

(१)

मा कुरु दर्पं[1] मा कुरु गर्वम्[2]
मा भव मानी[3] मानय सर्वम्।
मा भज दैन्यं मा भज शोकम्
मुदितमना[4] भव मोदय[5] लोकम्॥

(२)

मा वद मिथ्या मा वद व्यर्थम्
न चल कुमार्गे न कुरु अनर्थम्।
पाहि अनाथं पालय दीनम्
लालय माता-पितृ-विहीनम्॥

(३)

तनयं[6] पाठय तनयां पाठय
शिक्षय गुणं[7] दुर्गुणं वारय[8]।
कुरु उपकारं कुरु उद्धारम्
अपनय[9] भारं त्यज अपकारम्॥

(४)

मा पिब मादक-वस्तु[10] अपेयम्
मा भज दुर्व्यसनं[11] परिहेयम्।
मा नय[12] पलमपि व्यर्थं समयम्
कुरु सकलं निज-कार्यं सभयम्[13]॥

शब्दार्थः—१-२. घमंड ३. अभिमानी ४. प्रसन्नचित्त ५. प्रसन्न करो ६. पुत्र को ७. पुत्री को ८. रोको, दूर करो ९. दूर करो १०. नशीली चीजें ११. बुरी आदतें १२. बिताओ १३. डर के साथ, सावधानी से।

बालकानाम् आत्म-परिचयः

अहं वीरबालः
अहं वीरबालः

अहं मातृभक्तः अहं पितृभक्तः
अहं लोकसेवा-व्रती देशभक्तः।
अहं दीनबन्धुः अहं हीनबन्धुः
अहं पीडितानां महास्नेहसिन्धुः॥

परं दुर्जनानां
कृते क्रूरकालः। अहं०॥

सदा स्वच्छगेहः सदा स्वच्छदेहः
सदा शुद्धवित्तः सदा शुद्धचित्तः।
सदा शुभ्रवेषः सदा सत्यभाषी
शुचिः धर्मनिष्ठो न भोगी विलासी॥

सदा ब्रह्मचर्येण
उद्दीप्त-भालः। अहं०॥

स्वभावेन हृष्टः शरीरेण पुष्टः
विचारे द्रढिष्ठः विनोदेऽपि शिष्टः।
सदा साहसी दक्ष आलस्यहीनः
सुवक्ता सदा सर्वकार्ये प्रवीणः॥

शरीरे लघुः किन्तु
बुद्धौ विशालः। अहं०॥

स्वच्छं रक्ष

स्वच्छं रक्ष जलं जलपात्रम्
स्वच्छं रक्ष समस्तं गात्रम्[१]।
स्वच्छं रक्ष सकल-परिधानम्[२]
स्वच्छं रक्ष निवास-स्थानम्॥



ध्यानं देहि

ध्यानं देहि दरिद्रे दीने
ध्यानं देहि सहायक-हीने।
ध्यानं देहि पतित-संस्कारे[३]
ध्यानं देहि विपन्नोद्धारे॥

ध्यानं देहि भोजने पाने। ध्यानं देहि उचित-व्यवहारे।
ध्यानं देहि उषसि[४] उत्स्थाने[५]॥ ध्यानं देहि अतिथि-सत्कारे॥
ध्यानं देहि निजे कर्त्तव्ये। ध्यानं देहि राष्ट्र-निर्माणे।
ध्यानं देहि निजे मन्तव्ये॥ ध्यानं देहि विश्वकल्याणे॥
ध्यानं देहि पुस्तके पत्रे। ध्यानं देहि ज्येष्ठ-जन-माने।
ध्यानं देहि उपानहि छत्रे॥ ध्यानं देहि अनुज[८]-सन्माने॥
ध्यानं देहि विपन्ने[७] मित्रे। ध्यानं देहि सदा आरोग्ये।
ध्यानं देहि सदैव चरित्रे॥ ध्यानं देहि सेवके योग्ये॥

शब्दार्थः—१. शरीर २. पहिनावा, कपड़ा ३. पतित लोगों को शुद्ध करने में ४. उषा काल में ५. उठने में ६. जूते में ७. विपत्ति में पड़ा हुआ ८. छोटा भाई।

१—अव्यक्तध्वनीनाम् उदाहरणानि

वर्षा वर्णनम्

(१)

सर् सर् सर् सर् वहति समीरो[१]
झन् झन् झञ्झावातः[२]।
घहर घहर गर्जति घनमाला[३]
टप् टप् बिन्दु-निपातः।

(२)

चम् चम् चम् चम् चपला चञ्चति[४]
तड् तड् भवति निनादः[५]।
छहर छहर वर्षति जलधारा
हहर हहर भुवि[६] नादः[७]।

(३)

पी पी वदति पिको वन-विटपे[९]
टर् टर् रटति च भेकः[१०]।
नृत्यति नदति[११] मयूरो विपिने
भवति सुधा-रस-सेकः[१२]॥

(४)

निपतति नीरे चलति समीरे
थर् थर् कम्पित—देहम्।
बालक-वृन्दं व्रजति[१३] अमन्दं[१४]
धावति निज-निज-गेहम्॥

शब्दार्थः—१. हवा २. वर्षा के साथ चलने वाली हवा ३. बादलों का समूह ४. बिजली ५. आवाज ६. जमीन में ७. आवाज ८. पपीहा ९. वन के वृक्ष पर १०. मेंढक ११. बोलता है १२. अमृत रस का सिञ्चन १३. जाता है १४. जल्दी।

२—अव्यक्तध्वनीनाम् उदाहरणानि

म्याऊँ म्याऊँ वदति विडालः[१]
चूँ चूँ वदति च मूषक—बालः[२]।
फुर् फुर् उड्डयते चटकाऽलिः[३]
गुन् गुन् गुञ्जति मधुकर-पालिः[४]॥

गड् गड् तर्जति वारिद-माला[५]
तड् तड् तर्जति[६] विद्युद्-बाला[७]।
लस्-लस् लगति करे निर्यासः[८]
साँ साँ चलति गले निश्वासः[९]॥

हर् हर् वहति नदी-जलधारा
चर् चर् कृन्तति[१०] काष्ठम् आरा।
रुन् झुन् रौति कलं मञ्जीरम्[१२]
सुर् सुर् पिबति कुमारः क्षीरम्॥

टुन् टुन् भवति[१३] घण्टिका-रावः
में में नदति अजायाः[१४] शावः[१५]।
झुर् झुर् वहति वसन्ते वायुः
फे फे स्वनति[१६] वने गोमायुः[१७]॥

शब्दार्थः—१. बिजली २. चूहे का बच्चा ३. गवरैयों का समूह ४. भँवरों का समूह ५. मेघों का समूह ६. डरवाती है ७. बिजली रूपी नारी ८. गोंद ९. साँस १०. काटता है ११. आवाज करता है १२. मधुर १३. नूपुर, पायजेब १४. बकरी का १५. बच्चा १६. बोलता है १७. सियार।

३—अव्यक्तध्वनीनाम् उदाहरणानि

भों भों भों विवदन्ते श्वानः[१]
धम् धम् धम् धावन्ति युवानः[२]।
भन् भन् भणति मक्षिका गेहे
टप् टप् निपतति लाला[३] देहे॥

झर् झर् अश्रु[४] वहति मणिवर्णम्[५]
खर् खर् पतति पुराणं पर्णम्[६]।
रिम् झिम्[७] वर्षति मेघो नीरम्
टिम् टिम् ध्वनति दुन्दुभिः धीरम्॥

छप् छप् खेलति नीरे बालः
सन् सन् चलति रणे[८] करवालः[९]।
बुद् बुद् वदति बुद्बुदो[१०] नीरे
छल् छल् जलमुच्छलति समीरे॥

चट् चट् वदति पादुका[११] पादे
चुट् चुट् वदति च मुचुटी[१२] वादे।
बड् बड् वदति सदा वाचालः[१४]
फों फों वदति विलेषु व्यालः[१५]॥

शब्दार्थः—१. कुत्ते २. जवान पुरुष ३. लार ४. आँसू ५. मणि के रंग का ६. पत्ता ७. नगारा ८. लड़ाई में ९. तलवार १०. बुलबुला ११. खड़ाऊँ १२. चुटकी १३. बजाने पर १४. बेकार ज्यादा बोलने वाला १५. साँप।

किं कर्तव्यम् ?

किं कर्त्तव्यम्? परोपकारः।
किं हर्तव्यम्? पर-जन-भारः।
क्व[१] स्नातव्यम्? स्वच्छे नीरे।
क्व भ्रमितव्यम्? स्वच्छ-समीरे।

किं परिधेयम्[२]? स्वच्छं वसनम्[३]।
किं परिहेयम्[४]? सर्वं व्यसनम्[५]।
किं विज्ञेयम्? निज-कर्त्तव्यम्।
किमनुष्ठेयम्[६]? निज-मन्तव्यम्।

किं वक्तव्यम्[७]? हितकर-वचनम्।
किं श्रोतव्यम्? मधुरं रचनम्।
क्व स्थातव्यम्[८]? सुजन-समीपे।
क्व पठितव्यम्? स्वच्छे दीपे॥

किं कर्त्तव्यं संकटकाले? धैर्य-धारणम्।
किं कर्त्तव्यं दुर्जनसंगे? मौन-धारणम्।
किं कर्त्तव्यं वर्षासमये? छत्र-धारणम्।
किं कर्त्तव्यं रात्रौ गमने? दण्ड-धारणम्।

किं कर्त्तव्यं शैशवकाले? विद्याऽध्ययनम्।
किं कर्त्तव्यं यौवनकाले? विषय-सेवनम्।
किं कर्त्तव्यं वार्द्धककाले? भगवद्भजनम्।
किं कर्त्तव्यं चरमे काले? ईशस्मरणम्॥

शब्दार्थः—१. कहाँ २. पहनना चाहिये ३. वस्त्र ४. छोड़ना चाहिये ५. बुरी आदतें ६. क्य करना चाहिए ७. बोलना चाहिए ८. रहना चाहिये।

केन कः विभाति

(१)

तपसा[१] विभाति योगी
पथ्येन[२] भाति रोगी।
यशसा विभाति देही[३]
वित्तेन भाति गेही[४]॥

(२)

गेहे विभाति बालः
वृक्षे नवः प्रवालः[५]।
बहु भाति वाटिकायां[६]—
रमणीय[७] आलवालः[८]॥

(३)

वृद्धस्य भाति योगः[९]
तरुणस्य[१०] भाति भोगः।
कुशलस्य भाति पुंसः—
कार्ये शुभे नियोगः[११]॥

(४)

आज्येन[१२] भाति दालिः
दध्ना विभाति भक्तम्[१३]।
मरिचेन भाति शाकम्—
तैलेन चापि युक्तम्॥

शब्दार्थः—१. तप से २. रोग में हितकर आहार से ३. मनुष्य ४. गृहस्थ ५. कोंपल ६. फुलवारी में ७. सुन्दर ८. थाला ९. याग-साधना १०. जवान का ११. नियुक्ति तैनाती १२. घी से १३. भात।

उपदेशः

(१)

मूको[१] भव पर-निन्दा-करणे।
बधिरो[२] भव पर-निन्दा-श्रवणे।
पङ्गुः[३] भव परजन-धन-हरणे।
क्लीवो[४] भव पर-दार-विहरणे[५]॥

(२)

चौरो भव पर-गुण-शत-हरणे।
क्रूरो भव अवगुण-संहरणे।
अज्ञानी भव विबुध-समाजे।
अनुगामी भव साधु-समाजे॥

(३)

कृपणो भव धन-रक्षा-करणे।
निःस्वो[६] भव समुचित-व्यय[७] करणे॥
उग्रो[८] भव इन्द्रिय-गण-दमने।
व्यग्रो[९] भव वैरादिक-शमने[१०]॥

(४)

अलसो[११] भव अनुचित-कर्त्तव्ये।
चपलो[१२] भव समरे[१३] मर्तव्ये।
नीचो भव गुरु-जन-सहवासे।
धूर्तो भव रिपु-जन-विश्वासे॥

शब्दार्थः—१.गूँगा २. बहरा ३. लंगड़ ४. नपुंसक ५. पर स्त्री के साथ बिहार करने में ६. दरिद्र ७. खर्च ८. कठोर ९. व्याकुल १०. शान्त करने में ११. आलसी १२. युद्ध में।

मत्कुण[१]—पिपीलिका[२]—संवादः[३]

मत्कुणः उवाच—

कथय भगिनि[४]! किं तव अभिधानम्[५] ?
कथय कुत्र तव वास-स्थानम् ?
कथय कुतः सम्प्रति[६] आगच्छसि ?
त्वरितं[७] कुत्र किमर्थं[८] गच्छसि ?

अङ्गं तव अतिशय-सुकुमारम्
वहसि[९] तथापि अहो! गुरु-भारम्[१०]।
धावन्ती[११] गच्छसि अविरामम्[१२]
कथय कदा कुरुषे विश्रामम् ?

पिपीलिका उवाच—

मम पिपीलिका इति अभिधानम्
विवरे[१३] विद्धि[१४] मदीयं स्थानम्।
अति दूरादिह मम आगमनम्
दूरे एव पुनर्मम गमनम्॥

कृत्वा स्वयं श्रमं भोक्तव्यम्[१५]
इति मे अस्ति निजं मन्तव्यम्[१६]।
अतः श्रमे सततं संलग्ना
नैव कदापि गतिर्मे भग्ना[१७]॥

शब्दार्थः—१. खटमल २. चींटी ३. बातचीत ४. बहन ५. नाम ६. इस समय ७. तुरन्त ८. किसलिये ९. ढोती हो १०. भारी बोझा ११. दौड़ती हुई १२. निरन्तर १३. बिल में १४. जानो १५. खाना चाहिये १६. सिद्धान्त १७. खण्डित।

त्वं सदैव पर-तल्पे[1] लीनः[2]
पीत्वा पर-रुधिरं[3] खलु पीनः।
किन्तु इदं न उचित-कर्तव्यम्
न इदं वेद-शास्त्र-मन्तव्यम्॥

अतः श्रमं कृत्वा भोक्तव्यम्
इति भवताऽपि मतं मन्तव्यम्।
अस्तु, जहीहि,[4] देहि पन्थानम्
दूरे मम गन्तव्य-स्थानम्[5]॥



श्रम-महिमा

श्रमेण लभ्यते[6]ऽखिलम्।
श्रमेण लभ्यतेऽखिलम्॥

श्रमणे लभ्यते सुखम्।
श्रमेण लभ्यते धनम्।
श्रमेण लभ्यते यशः
श्रमेण लभ्यते पदम्[7]॥
श्रमेण लभ्यते गजः[8]
श्रमेण लभ्यते हयः[9]।
श्रमेण लभ्यते मही[10]
श्रमेण लभ्यते जयः॥

श्रमेण लभ्यते गतिः
श्रमेण लभ्यते मतिः।
श्रमेण लभ्यते पयः[11]
श्रमेण लभ्यते दधि॥
श्रमेण लभ्यते फलम्
श्रमेण लभ्यते जलम्॥
श्रमेण लभ्यते हरिः।
श्रमेण लभ्यतेऽखिलम्[12]॥

शब्दार्थः—१. बिछौने पर २. छिपे हुए ३. खून ४. छोड़ो ५. जाने का स्थान ६. मिलता है ७. स्थान, ओहदा ८. हाथी ९. घोड़ा १०. जमीन ११. दूध १२. सब कुछ।

गुण-महिमा

गुणेन सर्वं जना लभन्ते।
गुणेन सर्वं जना लभन्ते॥

गुणेन दानं जना लभन्ते,
गुणेन मानं[१] जना लभन्ते,
गुणेन स्थानं जना लभन्ते,
गुणेन यानं[२] जना लभन्ते,

गुणेन किञ्चिन्न दुर्लभं ते।
गुणेन सर्वं जना लभन्ते॥

गुणेन सौख्यं सदा स्वदेशे,
गुणेन सौख्यं सदा विदेशे,
गुणेन लोके सहानुभूतिः[३],
गुणेन लोके जयो विभूतिः[४],

गुणेन किं किं न आरभन्ते।
गुणेन सर्वं जना लभन्ते॥

गुणेन लोके सुखं[५] प्रवेशः
गुणेन लोके सुखं निवेशः[६],
गुणेन लोके सुखं निवासः,
गुणेन लोके सुखं प्रवासः[७],

गुणेन सर्वं सदा शुभं ते।
गुणेन सर्वं जना लभन्ते॥

शब्दार्थः—१. प्रतिष्ठा २. सवारी ३. हमदर्दी ४. ऐश्वर्य ५. आराम से, सुविधा से, ६. पड़ाव, डेरा ७. परदेश का निवास।

छात्रान् प्रति गुरोः प्रश्नः

(१)

संकटे धीरो भविष्यसि वा न वा?
संगरे[१] वीरो भविष्यसि वा न वा?
उन्नतौ विनयी भविष्यसि वा न वा?
वैभवे[२] प्रणयी[३] भविष्यसि वा न वा?

(२)

देशमानं वर्धयिष्यसि वा न वा?
जातिमानं वर्धयिष्यसि वा न वा?
वंशमानं वर्धयिष्यसि वा न वा?
आत्ममानं वर्धयिष्यसि वा न वा?

(३)

दुष्करं[४] कार्यं करिष्यसि वा न वा?
दुर्वहं[५] भारं च नेष्यसि वा न वा?
दुस्तरं[६] पारं तरिष्यसि वा न वा?
दुर्गमं[७] मार्गं गमिष्यसि वा न वा?

(४)

आत्मदोषं दूरयिष्यसि वा न वा?
आत्मलक्ष्यं[८] पूरयिष्यसि वा न वा?
निर्भयो लोके चरिष्यसि वा न वा?
अन्य-जन-भीतिं[९] हरिष्यसि वा न वा?

शब्दार्थः—१. युद्ध में २. सम्पत्ति में ३. प्रेमी ४. कठिन ५. भारी ६. कठिनाई से पार करने योग्य ७. कठिनाई से जाने योग्य ८. ध्येय ९. भय।

१—उत्तरं देहि

(१)

गंगा जगति केन आनीता?
हृता केन विपिने खलु सीता?
मुनिना केन समुद्रः पीतः?
कथं रावणो निधनं नीतः?

(२)

आसीत् को नयवेत्ता काणः?
आसीत् कस्य अमोघो वाणः?
बद्धः केन समुद्रे सेतुः?
सागरस्य मथने को हेतुः?

(३)

कदा केन विहितं विषपानम्?
कृतं केन निज-यौवन-दानम्?
को वृद्धोऽपि युवा संजातः?
गुरु-पराजये को विख्यातः?

(४)

मरणं कस्य निजेच्छाऽधीनम्?
नयनं कस्य निमेष-विहीनम्?
पितरौ कस्य च लोचन-हीनौ?
केन कथं तौ निहतौ दीनौ?

शब्दार्थः—१. लायी गई २. चुराई गई ३. नीतिशास्त्रज्ञ ४. काना ५. अव्यर्थ ६. पुल ७. कारण ८. हुआ ९. पलक १०. मारे गये।

२—उत्तरं देहि

(१)

हर्तुं कः गच्छति पर-वित्तम्?
हर्तुं कः क्षमते[१] पर-चित्तम्?
मर्तुं याति स्वयं को दीपे?
भर्तुं याति जलं कः कूपे?

(२)

को याचते नीरदं[२] नीरम्?
विना मस्तकं कस्य शरीरम्?
को दिवसेऽपि न द्रष्टुं शक्तः[३]?
को वध्वा[४] निशि भवति वियुक्तः[५]?

(३)

नृत्यति को विपिने घनकाले[६]?
कस्य तृतीयं नयनं भाले[७]?
भवति न कस्मिन् वृक्षे पत्रम्?
कस्य मस्तके ध्रियते[८] छत्रम्?

(४)

को न दिने कुरुते विश्रामम्?
कस्य एकचक्रं[९] रथ-यानम्[१०]?
को न फलति फुल्लति तरुरेकः?
यद्यपि भवति सुधा-रस-सेकः?

शब्दार्थः—१. सकता है २. बादल से ३. समर्थ ४. स्त्री से ५. अलग ६. बरसात में ७. ललाट पर ८. रखा जाता है ९. एक चक्के का १०. सवारी।

विचारं कुरु

(१)

रचयति कः सकलं संसारम्?
कुरुते को जगतः संहारम्?
कः पालयति दधाति[१] समस्तम्?
को न उदेति[२], न गच्छति अस्तम्?

(२)

कुतो भास्करे[३] एष प्रकाशः?
इन्दौ[४] कुतः शीतला भासः[५]?
अग्नौ कुतो भयङ्कर-दाहः?
पानीये कुत एष प्रवाहः?

(३)

वायुः कुतो वाति अविरामम्[६]?
इन्द्रो वर्षति कुतो निकामम्[७]?
अयं कुतो विपुलो[८] विस्तारः?
कुत्र अस्य पुनरुपसंहारः[९]?

(४)

इह कः पुण्य-पापयोः कर्ता?
कश्च शुभाऽशुभ-फलयोः भोक्ता[१०]?
को वा पुण्य-पाप-फल-दाता?
कोऽसौ- सकल-विधान-विधाता[११]?

शब्दार्थः—१. धारण करता है २. उगता है, जनमता है ३. सूर्य में ४. चन्द्रमा में ५. किरणें ६. विश्राम के, सदा ७. भरपूर ८. विशाल ९. समाप्ति १०. भोगने वाला ११. इन समस्त नियमों को बनाने वाला।

कदा किं भवति

(१)

उदयति सूर्ये विकसति कमलम्।
उदयति चन्द्रे विकसति कुमुदम्।
प्रवहति वायौ निपतति पत्रम्।
प्रचलति युद्धे निपतति शस्त्रम्॥

(२)

मिलिते मित्रे नन्दति[१] मित्रम्।
लोभे जाते पतति चरित्रम्।
क्षीणे आयुषि म्रियते देही[२]।
नष्टे विभवे विकलो गेही[३]॥

(३)

प्रभवति[४] तापे स्विद्यति[५] गात्रम्[६]।
पक्के शस्ये[७] प्रचलति दात्रम्[८]।
मद्ये[९] पीते माद्यति[१०] लोकः।
गच्छति काले शाम्यति[११] शोकः॥

(४)

पठति[१२] अपत्ये हृष्यति[१३] माता।
छलयति भ्रातरि युध्यति भ्राता।
शुष्यति नीरे सीदति[१४] मीनः[१५]।
मिलिते द्रव्ये विलसति दीनः॥

शब्दार्थः—१. प्रसन्न होता है २. मनुष्य ३. गृहस्थ ४. गर्मी ५. पसीजता है ६. शरीर ७. फसल ८. हसिया ९. शराब १०. मतवाला हो जाता है ११. शान्त होता है १२. सन्तान १३. हर्षित होती है १४. कष्ट पाता है १५. मछली।

कः किं किं करोति ?

(१)

पठति लिखति पृच्छति विद्यार्थी।
धावति मिलति वदति खलु प्रार्थी।
ध्यायति जपति भजति वर-योगी।
खादति पिबति मोदते भोगी॥

(२)

पचति पिनष्टि[१] च लिम्पति[२] बाला—
सीव्यति[३] गायति गुम्फति[४] मालाः।
उदयति तपति भ्रमति दिवि भानुः।
ज्वलति दहति तापयति कृशानुः[५]॥

(३)

युध्यति क्रुध्यति दृप्यति[६] शूरः।
द्रुह्यति[७] हन्ति[८] न स्निह्यति[९] क्रूरः।
मिलति लपति[१०] आलिङ्गति मित्रम्—
भ्रमति विशति शेते[११] सह चित्रम्॥

(४)

क्लिश्यति[१२] जल्पति[१३] प्रलपति रोगी।
स्मरति सदा चिन्तयति वियोगी॥
सहते वहति[१४] विपत्तिं धीरः।
रक्षति निज-वचनं प्रण-वीरः॥

शब्दार्थः—१. पीसती है २. लीपती है ३. सीती है ४. गूँथती है ५. आग ६. गर्व करता है ७. द्रोह करता है ८. मारता है ९. स्नेह करता है १०. वार्तालाप करता है ११. सोता है १२. क्लेश पाता है १३. बातें करता है १४. ढोता है।

बाल-प्रतिज्ञा

(१)

करिष्यामि नो सङ्गतिं दुर्जनानाम्।
करिष्यामि सत्सङ्गतिं सज्जनानाम्।
धरिष्यामि पादौ सदा सत्यमार्गे।
चलिष्यामि नाहं कदाचित् कुमार्गे॥

(२)

हरिष्यामि वित्तानि[१] कस्यापि नाऽहम्।
हरिष्यामि चित्तानि सर्वस्य चाऽहम्।
वदिष्यामि सत्यं न मिथ्या कदाचित्।
वदिष्यामि मिष्टं[२] न तिक्तं[३] कदाचित्॥

(३)

भविष्यामि धीरो भविष्यामि वीरः।
भविष्यामि दानी स्वदेशाभिमानी।
भविष्यामि उत्साह-युक्तः सदाऽहम्।
भविष्यामि आलस्ययुक्तो न चाऽहम्॥

(४)

सदा ब्रह्मचर्य-व्रतं पालयिष्ये।
सदा देश-सेवा-व्रतं धारयिष्ये।
न सत्ये शिवे सुन्दरे जातु[४] कार्ये—
स्वकीये पदे पृष्ठतो[५]ऽहं करिष्ये॥

शब्दार्थः—१. धन २. मधुर ३. तीता ४. कमी ५. पीछे।

बालकानां क्रीडा

दिशि दिशि खेलति बालकवृन्दम्।
दिशि दिशि खेलति बालकवृन्दम्॥

खेलति कोऽपि कूर्दते, धावति, कोऽपि पतति अनुवारम्।
उत्तिष्ठति उपविशति सशङ्कं भ्राम्यति विविध-प्रकारम्।

यदि पलायते कोऽपि तदाऽन्यः
अनुधावति तं धर्तुममन्दम्॥

कोऽपि करेण निमीलति नयनं, कोऽपि निलीनः पश्यति।
ध्रियमाणोऽपि अनेक-वयस्यैः, सहसा कोऽपि विनश्यति।

प्रकटो भवति पुनः स्वयमेव स।
विहसति नितरां नन्दं नन्दम्॥

कोऽपि करेण निहन्ति कन्दुकं कोऽपि पदेन निहन्ति।
अन्ये ततो मिलित्वा बहवो मिथो मुहुः निपतन्ति।

असौ असौ आगत आगत इत
एष एष इति क्रन्दं क्रन्दम्॥

शब्दार्थः—१. कोई २. कूदता है ३. बार-बार ४. भागता है ५. पीछे से दौड़ता है, पिठिआता है ६. पकड़ने के लिये ७.जल्दी ८. मुँदता है ९. छिप कर १०. पकड़ जाता हुआ भी ११. अचानक १२. गायब हो जाता है १३. खुश हो हो करके १४. गेंद १५. फिर १६. इधर बार-बार १७. चिल्लाता हुआ।

खेलनम्

खेलनं हितकरं सदा सखे।
खेलनं नहि कदापि हीयताम्[१]॥

शैशवेऽति बलकारि खेलनम्
यौवनेऽति सुखकारि खेलनम्।
वार्द्धकेऽपि हितकारि खेलनम्
खेलनं नहि कदापि हीयताम्॥

राघवेण खलु खेलितं पुरा
माधवेन खलु खेलितं पुरा।
खेलनानि विदधुः[२] पुरा[३] सुराः॥
खेलनं नहि कदापि हीयताम्॥

खेलनं श्रमहरं[४] सदा सखे
खेलनं क्लमहरं[५] सदा सखे।
खेलनं ननु वरं[६] सदा सखे
खेलनं नहि कदापि हीयताम्॥

खेलनेन च बलं विवर्द्धते
खेलनेन पटुता[७] प्रवर्तते।
खेलनं न सततं विधीयताम्[८]
खेलनं न च कदापि हीयताम्॥

शब्दार्थः—१. छोड़िये २. क्रिया ३. प्राचीन काल में ४. थकान दूर करनेवाला ५. ग्लानि दूर करने वाला ६. उत्तम ७. चतुरता, होशियारी ८. हमेशा ९. कीजिये।

प्रभात-वर्णनम्

चन्द्रः अस्तं गच्छति
सूर्यः उदयं गच्छति
परितो भवति प्रकाशः
तमसो भवति विनाशः ॥

मन्दं चलति समीरः
मधुपो भवति अधीरः
कलिका-वृन्दं विकसति
लतिका-वृन्दं विलसति ॥

निद्रा तन्द्रा भग्ना
जनता कर्मणि लग्ना
सकले नव उल्लासः
वदने वदने हासः ॥

पथि पथि जन-सञ्चारः
नूपुर — नव — झङ्कारः
विटपे खग-कुल-रावः
चरितुं चलिता गावः ॥

हस्ते हस्ते पत्रम्
वदने वदने चायम्
खेलति बालक-वृन्दं
गीतं गायं गायम् ॥

शब्दार्थः—१. चारो ओर २. अन्धकार का ३. भौंरा ४. कलियों का समूह ५. लताओं का समूह ६. सब में ७. पायल ८. पेड़ पर ९. चिड़ियों की आवाज १०. समाचार पत्र ११. गा-गाकर।

संस्कृत-गानम्

[संस्कृत के प्रत्येक छात्र को इसे कण्ठस्थ करना चाहिए, इसकी प्रत्येक पंक्ति का अर्थ समझना चाहिए तथा उस पर युक्तिपूर्ण एवं प्रामाणिक भाषण देने का अभ्यास करना चाहिए ।]

भारतीयैकता-साधकं संस्कृतम्
भारतीयत्व-सम्पादकं संस्कृतम्
ज्ञान-पुञ्ज-प्रभा-दर्शकं संस्कृतम्
सर्वदानन्द-सन्दोह-दं संस्कृतम्

२

सर्व-मस्तिष्क-संस्कारकं संस्कृतम्
सर्व-वाणी-परिष्कारकं संस्कृतम्
सत्पथ-प्रेरणा-दायकं संस्कृतम्
सद्गुण-ग्राम-सन्धायकं संस्कृतम् ।

३

विश्वबन्धुत्व-विस्तारकं संस्कृतम्
सर्वभूतैकता-कारकं संस्कृतम्
सर्वतः शान्ति-संस्थापकं संस्कृतम्
पञ्चशील-प्रतिष्ठापकं संस्कृतम् ।

४

त्याग-सन्तोष-सेवा-व्रतं संस्कृतम्
विश्वकल्याण-निष्ठायुतं संस्कृतम्
ज्ञान-विज्ञान-सम्मेलनं संस्कृतम्
भुक्ति-मुक्ति-द्वयोद्वेलनं संस्कृतम् ।

५

धर्मकामार्थ-मोक्ष-प्रदं संस्कृतम्
ऐहिकामुष्मिकोत्कर्ष-दं संस्कृतम्
कर्मदं ज्ञानदं भक्तिदं संस्कृतम्
सत्यनिष्ठं शिवं सुन्दरं संस्कृतम् ।

६

"सोऽहमस्मीति"-निश्चायकं संस्कृतम्
"त्वं तदेवेति" संगायकं संस्कृतम्
"एकमेवाद्वयं"–बोधकं संस्कृतम्
सर्वदा सत्यसंशोधकं संस्कृतम् ।

७

शब्द-लालित्य-लीलावनं संस्कृतम्
चारु-माधुर्य-धारागृहं संस्कृतम्
विश्व-चेतश्चमत्कारकं संस्कृतम्
पूर्वजानां यशःस्मारकं संस्कृतम् ।

नगरे नगरे ग्रामे ग्रामे विलसतु संस्कृत-वाणी
सदने सदने जन-जन-वदने जयतु चिरं कल्याणी ।
सत्य-शील-सौन्दर्य-समीरा, ज्ञान-जला, गति-सारा,
छल-छल कल-कल प्रवहतु दिशिदिशि पावन-संस्कृत-धारा ॥

❋